International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 347-350

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 347-350
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-03-2022
Accepted: 23-04-2022

सुनील कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, संस्कृत, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सुनील कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, संस्कृत, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

वैदिक यज्ञ से वातावरण शोधन

सुनील कुमार पाण्डेय

सारांश
मानवी काया सृष्टि की सर्वोपरि संरचना है। इसके रोम–रोम में विलक्षणता संव्याप्त है। शरीर की स्थूल गतिविधियों के मूल में अनेकानेक जादू भरी विशेषताएँ छिपी पड़ी हैं। पंचतत्त्वों से बनी इस काया का प्रकृतिपरक स्थूल अंश ही जब इ तना अद्भुत है तो फिर उसकी स्थूल सत्ता की महत्ता तो अकल्पनीय है। सच तो यह है कि स्थूल–सूक्ष्म की कृपा पर ही निर्भर है। इस तथ्य का प्रतिपादन शरीर के महत्वपूर्ण घटक हारमोन्स करते है। कार्य–संरचना एवं व्यक्तित्व का निर्धारण तो ये करते ही हैं। जीवनी शक्ति, जिजीविषा, भावना, संवेदनाएँ, आवेग आदि महत्वपूर्ण अदृश्य सामर्थ्यों का विकास भी हारमोन्स की दया से ही होता है।
उपरोक्त तथ्य दृश्यमान स्थूल के अन्तराल में छिपी सूक्ष्म सत्ता की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं, पर मानव ने मात्र स्थूल जगत की क्रियाओं एवं स्वरूप को देखा है तथा उसी से प्रभावित भी हुआ है। अनेकों विभ्रम एवं रोगों–शोकों का कारण यही बाह्य दृष्टि रही है, मात्र बाह्य सुख सुविधाओं पर ध्यान देने का दुष्परिणाम यह हुआ है कि संवेदनाओं का स्तर ही शारीरिक स्वास्थ्य का निर्धारण करता है। वृक्ष की बाहरी स्वरूप तो फल–फूल, पत्तियों के रूप में दिखाई देता है, पर इस बाह्य ऐश्वर्य के मूल में जो सत्ता काम कर रही है वह उसकी जड़ में है। यही बात, शारीरिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में भी है। अन्तःकरण की शुष्कता एवं मनोविकार बाहर से स्वस्थ दिखाई देने वाले व्यक्ति को भी आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार अस्वस्थ ही ठहराते हैं। महत्ता यहाँ भी इन सूक्ष्म विकारों की है जो स्थूल चर्मचक्षुओं से दिखाई नहीं देते।

कूट शब्दः मानवी काया सृष्टि, विलक्षणता संव्याप्त, जीवनी शक्ति, जिजीविषा, भावना, संवेदनाएँ, आवेग

प्रस्तावना
मनुष्य के उन्नत स्वास्थ्य हेतु आत्मिक, मानसिक एवं शारीरिक व्याधियों के निराकरण एवं स्वास्थ्य सम्वर्धन के सन्दर्भों से आर्ष ग्रन्थ भरे भड़े हैं। ऋषि गणों ने कार्य संरचना एवं आस्थाओं के पारस्परिक सामंजस्य को प्रधानता दी। यही कारण था कि तत्कालीन समाज व्यवस्था सतयुगी कहलाती थी। मानव समुदाय चिरस्थायी स्वास्थ्य का आनन्द भोगता था। यज्ञ ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा दिव्य संस्कारीय औषधियों एवं पुष्टाई को सूक्ष्म विकारों की जड़ जिन स्थानों पर होती है, वहाँ तक अन्य औषधियाँ नहीं पहुँच पातीं। परन्तु धूमीकृत औषधि विभिन्न मार्गों द्वारा पहुँचकर तत्काल अपना प्रभाव दिखाती है एवं मानव को कष्ट, पीड़ा से मुक्ति दिलाती है। यह विज्ञान अपने चिरपुरातन समय में शिखर पर था एवं उस काल के वैज्ञानिकों ने इस पर शोध कर इस पद्धति को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया था। मध्यकालीन समय में अनेकानेक विकृतियाँ विसंगतियाँ इस क्षेत्र में भी प्रवेश कर गईं फलतः आस्थायुक्त कर्मकाण्डों द्वारा वनौषधि यजन की यह प्रक्रिया मात्र जलने की प्रक्रिया तक ही सीमित रह गयी। आज की विभीषिका को दृष्टिगत रख दैवी प्रेरणा हुई है कि आधनिकतम वैज्ञानिक शोधों द्वारा इस चिरपुरातन चिकित्सा व्यवस्था को भी प्रयोग परीक्षण की कसौटी पर रखा जाय एवं समस्त मानवता को एक ऐसा उपहार दिया जाय जो आने वाले सहस्रों वर्षों तक समग्र स्वास्थ्य सम्बर्धन का एक स्वरूप बन सके।

यज्ञीय विज्ञान
संक्रमण कोरोना भागेगा घर–घर यज्ञ होने से, आचार्य पं0 विशाल वल्लभ जी महाराज मन्त्रों में अनेक शक्ति के स्रोत दबे हैं। जिस प्रकार अमुक स्वर–विन्यास से युक्त शब्दों की रचना करने से अनेक राग–रागिनियाँ बजती हैं और उनका प्रभाव सुनने वालों पर विभिन्न प्रकार का होता है, उसी प्रकार मंत्रोंच्चारण से भी एक विशिष्ट प्रकार की ध्वनि तरंगें निकलती हैं और उनका भारी प्रभाव विश्वव्यापी प्रकृति पर सूक्ष्म जगत् पर तथा प्राणियों के स्थूल तथा सूक्ष्म शरीरों पर पड़ता है।

यज्ञ के द्वारा जो शक्तिशाली तत्त्व वायुमण्डल में फैलाये जाते हैं, उनसे हवा में घूमते असंख्यों रोग कीटाणु सहज ही नष्ट होते हैं। डी.डी.टी., फिनायल आदि छिड़कने, बीमारियों से बचाव करने वाली दवाएं या सुइयॉ लेने से भी कहीं अधिक कारगर उपाय यज्ञ करना है। साधारण रोगों एवं महामारियों से बचने का यज्ञ एक सामूहिक उपाय है। दवाओं में सीमित स्थान एवं सीमित व्यक्तियों को ही बीमारियों से बचाने की शक्ति है; पर यज्ञ की वायु तो सर्वत्र ही पहुंचती है और प्रयत्न न करने वाले प्राणियों की भी सुरक्षा करती है। मनुष्य की ही नहीं, पशु–पक्षियों, कीटाणुओं एवं वृक्ष–वनस्पतियों के अरोग्य की भी यज्ञ से रक्षा होती है।

यज्ञ की ऊष्मा मनुष्य के अंतःकरण पर देवतव की छाप डालतीह है। जहां यज्ञ होते हैं, वह भूमि एवं प्रदेश सुसंस्कारों की छाप अपने अन्दर धारण कर लेता है और वहां जाने वालों पर दीर्घकाल तक प्रभाव डालता रहता है। प्राचीनकाल में तीर्थ वहीं बने हैं, जहां बड़े–बड़े यज्ञ हुए थे। जिन घरों में, जिन स्थानों में यज्ञ होते हैं, वह भी एक प्रकार का तीर्थ बन जाता है और वहां जिनका आगमन रहता है, उनकी मनोभूमि उच्च, सुविकसित एवं सुसंस्कृत बनती है। महिलाएं, छोटे बालक एवं गर्भस्थ बालक विशेष रूप से यज्ञ शक्ति से अनुंप्राणित होते हैं। उन्हें सुसंस्कारी बनाने के लिए यज्ञीय वातावरण की समीपता बड़ी उपयोगी सिद्ध होती है।

कुबुद्धि, कुविचार, दुर्गुण एवं दुष्कर्मों से विकृत मनोभूमि में यज्ञ से भारी सुधार होता है। इसलिए यज्ञ को पापनाशक कहा गया है। यज्ञीय प्रभाव से सुसंस्कृत हुई विवेकपूर्ण मनोभूमि का प्रतिफल जीवन के प्रत्येक क्षण को स्वर्ग जैसे आनन्द से भर देता है, इसलिए यज्ञ को स्वर्ग देने वाला कहा गया है।

यज्ञीय धर्म प्रक्रियाओं में भाग लेने से आत्मा पर चढ़े हुए मल–विक्षेप दूर होते हैं। फलस्वरूप तेजी से उसमें ईश्वरीय प्रकाश जगता है। यज्ञ से आत्मा में ब्राह्मण तत्त्व, ऋषि तत्त्व की वृद्धि दिनानुदिन होती है और आत्मा को परमात्मा से मिलाने का परम लक्ष्य बहुत सरल हो जाता है। आत्मा और परमात्मा को जोड़ देने का, बांध देने का कार्य यज्ञाग्नि द्वारा ऐसे ही होता है, जैसे लोहे के टूटे हुए टुकड़ों को बैल्डिंग की अग्नि जोड़ देती है। ब्राह्मणत्व यज्ञ के द्वारा प्राप्त होता है। इसलिए ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिए एक तिहाई जीवन यज्ञ कर्म के लिए अर्पित करना पड़ता है। लोगों के अंतःकरण में अन्त्यज वृत्ति घटे–ब्राह्मण वृत्ति बढ़े, इसके लिए वातावरण में यज्ञीय प्रभाव की शक्ति भरना आवश्यक है।

विधिवत् किये गये यज्ञ इतने प्रभावशाली होते हैं, जिसके द्वारा मानसिक दोषों–दुर्गुणों का निष्कासन एवं सद्भावों का अभिवर्धन नितान्त संभव है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष, कायरता, कामुकता, आलस्य, आवेश, संशय आदि मानसिक उद्वेगों की चिकित्सा के लिए यज्ञ एक विश्वस्त पद्धति है। शरीर के असाध्य रोगों तक का निवारण उससे हो सकता है।

यज्ञ का धूम्र आकाश में बादलों में जजाकर खाद बनकर मिल जाता है। वर्षा के जल के साथ जब वह पृथ्वी पर आता है, तो उससे परिपुष्ट अन्न, घास तथा वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं, जिनके सेवन से मनुष्य तथा पशु–पक्षी सभी परिपुष्ट होते हैं। यज्ञागिन के माध्यम से शक्तिशाली बने मन्त्रोच्चार के ध्वनि कम्पन, सुदूर क्षेत्र में बिखरकर लोगों का मानसिक परिष्कार करते हैं, फलस्वरूप शरीरों की तरह मानसिक स्वास्थ्य भी बढ़ता है।

अनेक प्रयोजनों के लिए–अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए अनेक विधानों के साथ, अनेक विशिष्ट यज्ञ भी किये जा सकते हैं। दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ करके चार उत्कृष्ट सन्तानं प्राप्त की थीं, अग्निपुराण में तथा उपनिषदों में वर्णित पंचाग्नि विद्या में ये रहस्य बहुत विस्तारपूर्वक बताये गये हैं। विश्वामित्र आदि ऋषि प्राचीनकाल में असुरता निवारण के लिए बड़े–बड़े यज्ञ करते थे। राम–लक्ष्मण को ऐसे ही एक यज्ञ की रक्षा के लिए स्वयं जाना पड़ा था। लंका युद्ध के बाद राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। महाभारत के पश्चात् कृष्ण ने भी पाण्डवों से एक महायज्ञ कराया था, उनका उद्देश्य युद्धजन्य विक्षोभ से क्षुब्ध वातावरण की असुरता का समाधान करना ही था। जब कभी आकाश के वातावरण में असुरक्षा की मात्रा बढ़ जाए, तो उसका उपचार यज्ञ प्रयोजनों से बढ़कर और कुछ हो नहीं सकता। आज पिछले दो महायुद्धों के कारण जनसाधारण में स्वार्थपरता की मात्रा अधिक बढ़ जााने से वातावरण में वैसा ही विक्षोभ फिर उत्पन्न हो गया है। उसके समाधान के लिए यज्ञीय प्रक्रिया को पुनर्जीवित करना आज की स्थिति में और भी अधिक आवश्यक हो गया है।

यज्ञीय प्रेरणाएँ

यज्ञ आयोजनों के पीछे जहाँ संसार की लौकिक सुख–समृद्धि को बढ़ाने की विज्ञान सम्मत परंपरा सन्निहित है–जहाँ दैव शक्तियों के आवाहन–पूजन का मंगललमय समावेश है, वहाँ लोक शिक्षण की भी प्रचुर सामग्री भरी पड़ी है। जिस प्रकार 'बाल फ्रेम' में लगी हुई रंगीन लकड़ी की गोलियाँ दिखाकर छोटे विद्यार्थियों को गिनती सिखाई जाती है, उसी प्रकार यज्ञ का दृश्य दिखाकर लोगों को यह भी समझाया जाता है कि हमारे जीवन की प्रधान नीति 'यज्ञ' भाव से परिपूर्ण होनी चाहिए। हम यज्ञ आयोजनों में ले–परमार्थ परायण बनें और जीवन को यज्ञ परंपरा में ढालें। हमारा जीवन यज्ञ के समान पवित्र, प्रखर और प्रकाशवान् हो। गंगा स्नान से जिस प्रकार पवित्रता, शान्ति, शीतलता, आदरता को हृदयंगम करने की प्रेरणा ली जाती है, उसी प्रकार यज्ञ से तेजस्विता, प्रखरता, परमार्थ परायणता एवं उत्कृष्टता का प्रशिक्षण मिलता है। यज्ञ वह पवित्र प्रक्रिया है जिसके द्वारा अपावन एवं पावन के बीच सम्पर्क स्थापित किया जाता है। यज्ञ की प्रक्रिया को जीवन यज्ञ का एक रिहर्सल कहा जा सकता है। अपने घी, शक्कर, मेवा, औषधियाँ आदि बहुमूल्य वस्तुएँ जिस प्रकार हम परमार्थ प्रयोजनों में होम करते हैं, उसी तरह अपनी प्रतिभा, विद्या, बुद्धि, समृद्धि, सामर्थ्य आदि को भी विश्व मानव के चरणों में समर्पित करना चाहिए। इस नीति को अपनाने वाले व्यक्ति न केवल समाज का, बल्कि अपना भी सच्चा कल्याण करते हैं। संसार में जितने भी महापुरूष, देवमानव हुए हैं, उन सभी को यही नीति अपनानी पड़ी है। जो उदारता, त्याग, सेवा और परोपकार के लिए कदम नहीं बढ़ा सकता, उसे जीवन की सार्थकता का श्रेय और आनन्द भी नहीं मिल सकता।

वस्तुतः रोग एक विकृति है जो जीवन यापन के सीमा बंधनों का उल्लंघन करने पर प्रकृति के दण्ड विधान द्वारा मनुष्य के ऊपर आ बरसती है। खान–पान, आहार–बिहार का अपना प्रकृतिगत स्वरूप है। समस्त खाद्य पदार्थ प्रकृति की मनुष्य को देन है। चाहे वे फल हैं या मिर्चमसाले। जीभ का असंयम एवं प्रकृति के विपरीत आचरण ही व्याधियों को आमंत्रित करता है। अमेरिका के सुप्रसिद्ध चिकित्सा शास्त्री एम0डी0 पशीने का मत है कि ''बीमारियों का कारण विजातीय द्रव्य अथवा कीटाणु नहीं अपितु जीवनी शक्ति का अभाव है।''

यज्ञ शब्द के तीन अर्थ होते हैं, दान–देवपूजन। इन्हें प्रकारान्तर से उदारता, उत्कृष्टता एवं सहकारिता की दिशा धारा कहा जा सकता है। यज्ञीय दर्शन को जीवन में उतारने वाला कोई भी व्यक्ति इसी जीवन में स्वस्थ, समृद्ध, समुन्नत एवं सुसंस्कृत रह सकता है। ऐसे व्यक्ति को आंतरिक प्रसन्नता एवं बाह्य प्रफुल्लता का अभाव नहीं रहता। यज्ञकृत्य कराने और सम्मिलित होने वालों को प्रत्येक विधि–विधान की व्याख्या करते हुए यह समझाया जाता है कि उनका चिन्तन और चरित्र; दृष्टिकोण एवं व्यवहार निरन्तर उत्कृष्टता की ओर बढ़ता रहे। उद्गाता यही गाते हैं। अध्वर्यु यही सिखाते हैं, ब्रह्मा इसी की योजना बनाते हैं और आचार्य को ऐसी व्यवस्था बनानी होती है कि इसी प्रकार भाव प्रवाह उस समूचे वातावरण पर छाया रहे। रोगोपचार के पीछे यही तथ्य छिपा है कि नीतिवान नीरोग, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी होता है। यज्ञ के पुनीत अनुष्ठान के साथ ही इसी नीति दर्शन को प्रत्येक याजक को समझाया जाता है।

यज्ञ विज्ञान की अनुसंधान प्रक्रिया का शुभारम्भ जिन पक्षों से किया गया है वे है– यज्ञ से रोग निवारण, स्वास्थ्य सम्बर्धन, प्रकृति

सन्तुलन एवं वनस्पति संवर्धन, दैवी अनुकूलन, समाज शिक्षण, शक्ति जागरण तथा यज्ञ की विकृतियाँ एवं विसंगतियाँ। शोध की परिधि असीम है। परन्तु प्रारम्भिक प्रयास के रूप में यज्ञ विज्ञान के इन्हीं प्रमुख आठ पक्षों को प्रयोग परीक्षण की कसौटी पर रखा गया है।

यज्ञ प्रक्रिया की शोध के अनेकानेक आयाम हैं यथा हविष्य धूम्र, यज्ञावशिष्ट, यज्ञऊर्जा, मंत्रोच्चार में सन्निहित शब्दशक्ति, याजक गणों का व्यक्तित्व एवं उपवास, मौन प्रायश्चित, आदि धर्मानुष्ठानों से जुड़ी तपश्चर्याएँ। इन प्रयोजनों का शास्त्रों में उल्लेख तो है, पर उनके विधानों, अनुपातों और सतर्कताओं का वैसा उल्लेख नहीं मिलता, जिसके आधार पर समग्र उपचखर बन पड़ने की निश्चिन्तता रह सके। यज्ञविद्या को सांगोपांग बनाने के लिए शास्त्रों के साकेतिक विधानों को वैज्ञानिक एवं सर्वांगपूर्ण बनाना होगा। यह कार्य चिरपुरातन की इस आधुनिक शोध द्वारा सम्भव है।

सारा यज्ञ–विज्ञान अपने आप में एक विशद शोध का विषय है। जैसे–तैसे शोध प्रक्रिया विकसित होती जायेगी, साधन एवं सुयोग्य व्यक्ति उपलब्ध होते जायेंगे, एक–एक पक्ष अपने विस्तृत रूप में जन–मानस के सामने पकट होता चलेगा। इसी की आज आवश्यकता भी थी।

यह तो यज्ञ–विज्ञान का वैज्ञानिक पक्ष रहा। यज्ञ का दार्शनिक पक्ष इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। यज्ञ दर्शन में समाज का शिक्षण सन्निहित है। एक–एक कर्मकाण्ड अपने अन्दर कई शिक्षाएँ लिये हुए हैं। यज्ञीय प्रेरणाओं से मानवीय व्यक्तित्व के विकास एवं सामाजिक उत्थान में मिलने वाले योगदान पर ध्यान देने पर यह तथ्य उभर कर आता है कि समग्र 'पैथी' इनको जोड़ने से ही बनती है। सामूहिकता, सहकारिता, अनुशासन, शोभा, सुसज्जा जैसी कई प्रवृत्तियों के अभिवर्धन का शिक्षण यज्ञ द्वारा समाज का किया जा सकता है। इस तरह रोग निवारण, स्वास्थ्य सम्बर्धन, वनस्पति सम्वर्धन, वातावरण निर्माण एवं संशोधन, दैवी अनुकूलन, शक्तिजागरण, समाज शिक्षण जैसे अनेकानेक पक्षों का समावेश यज्ञ–विज्ञान में है।

अनुमानित आंकड़े के अनुसार सिर्फ एक टन पराली जलाने से 5.5 किग्रा नाइट्रोजन, 2.3 किग्रा फास्फोरस, 25 किग्रा पोटेशियम व 1.2 किग्रा सल्फर पराली जलाने से प्रति वर्ष खेत से नष्ट हो जाते हैं। इसके कारण कई तरह के सूक्ष्म पौष्टिकता भी खेत से नष्ट हो जाती है और वायु प्रदूषण के घटक के रूप में सहायता प्रदान करती है। पराली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण और नुकसान को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय पराली नीति बनाई, जिसे राज्यों को सख्ती से लागू करने को कहा गया, लेकिन इसका अमल न के बराबर प्रतीत होता है। पराली नीति पर अमल के लिए विभिन्न कृषि, वन और पर्यावरण मंत्रालय ने अपनी–अपनी तरफ से राज्यों को वित्तीय मदद पहुंचाने का प्रावधान है।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार धरती से अन्न के अलावा अन्य निकलने वाले पदार्थ भी उपयोगी होते हैं। अतः पराली का उपयोग पशुचारा कंपोस्ट खाद बनाने, ग्रामीण क्षेत्रों में छप्पर बनाने, पेपर बोर्ड बनाने आदि में इस्तेमाल के लिए सरकार द्वारा जनता को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। बढ़ते हुए वायु प्रदूषण को देखते हुए सरकारों को उचित और सकारात्मक पहल करने की जरूरत है, जिससे समय रहते प्रदूषण पर काबू पाया जा सके। वर्तमान स्थिति में वातावरण में व्याप्त पर्यावरण प्रदूषण को जानने से पहले इसके जड़ की बातें मालूम होना आवश्यक है, जो इस प्रकार है–

पर्यावरण होता क्या है ?

पर्यावरण के अंतर्गत हम जीव–जंतु, पहाड़, जल, वायु, प्रकाश आदि को शामिल कर सकते हैं, जो मानव जीवन के साथ–साथ इस धरा पर निवास करने वाली सभी प्राणियों के लिए आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 में पर्यावरण को परिभाषित करते हुए कहा गया कि पर्यावरण में एक तरफ पानी, वायु और भूमि और उनके मध्य अंतः संबंध होते है और दूसरी तरफ मानवीय प्राणी, पेड़–पौधे आदि होते हैं। भारत में प्राचीन काल में ही कौटिल्य द्वारा पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई थी।

ग्लोबल वार्मिंग क्या है ?

वैज्ञानिकों के अनुसार ग्रीन हाउस गैसों की वजह से धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है। जिसके कारण 2050 तक सूर्य के औसत तापमान में 2 डिग्री की बढ़ोत्तरी देखी जा सकती है। ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव के कारण वातावरण में भारी उथल–पुथल होने की आशंका है, जिसकी वजह से ग्लेशियर तेजी से पिघलेंगे, जिससे तटीय इलाके वाले देश जैसे इंडोनेशिया, जापान, वियत नाम और अन्य देश पीड़ित होंगे। ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से बचने के किलए 120 देशें की बैठक में इंटर गवर्नमेंट पैनल ऑन क्लाइमतेंट चेंज की रिपोर्ट के अनुसार अगर दुनियां की कुल आमदनी का तीन प्रतिशत हिस्सा भी ग्लोबल वार्मिंग से निपटने पर खर्च किया जायेगा।

मीडिया की भूमिका

इस धरा पर अभी तक न जाने कितनी सभ्यताएं उदित हुई और खत्म हो चुकी इसका विवरण मानव जीवन में नहीं पता चला। पर्यावरण प्रदूषण के कारण सामाजिक वातावरण में जहर घुल रहा है। जिससे बचाव में मीडिया अपना अहम योगदान कर रही है। मीडिया का वह चाहे जो भी माध्यम हो, पर्यावरण प्रदूषण से बचाव और उसके खिलाफ जागरूक करने के लिए परंपरागत माध्यमों आदि के द्वारा ग्रामीण इलाकों आदि में अशिक्षित जनता को जागरूक करने की कोशिश प्राचीन समय से चल रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण से बचाव के लिए टीवी चैनलों और रेडियो पर समय–समय पर जनहित से जुड़े विज्ञापन आदि के माध्यम से प्रदूषण के खिलाफ लोगों को जागरूक करने का काम मीडिया करती आ रही है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का महत्व

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में टेलीविजन, रेडियो, फिल्म आदि को शामिल किया जा सकता है। रेडियो के माध्यम से शिक्षा, सूचना और मनोरंजन का प्रसारण होता है। इसके जरिये सामान्य जन जागरण तक पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण शिक्षा आदि का प्रसारण समय पर किया जाता रहता है। पेड़ लगाओ अभियान आदि की जन जागरूक जानकारियों की जानकारी से लोग्रें को अवगत कराया जाता रहता है। भारत में मुम्बई में रेडियो क्लब द्वारा जून 1923 में प्रथम बार प्रसारण हुआ। अकाशवाणी अपने लोगों आकाशवाणी, लोक वाणी, जन वाणी के मुताबिक लोगों को शिक्षित करने के साथ समय–समय पर पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली हानि के बारे में बताकर लोगों का ज्ञान बढ़ाने का कार्य करता है। वर्तमान समय में रेडियो पर्यावरण संरक्षण, उसकी नीतियों से जनता को अवगत करने का काम तेजी से करती आ रही है।

टेलीविजन का महत्व

दूरदर्शन अपने शुरूआती दौर से ही समाज को शिक्षित करने के साथ वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे म्रें जनता को अवगत कराता आ रहा है। स्टार प्लस पर सत्यमेव जयते कार्यक्रम के द्वारा समाज में पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली समस्याओं से जनता को बताया गया है। टेलीविजन का पर्यावरण की समस्या से निपटने का प्रयास वास्तव में सराहनीय है। वह समय पर ऐसे प्रोग्राम प्रस्तुत करता रहता है, जिससे लोगों में पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली व्याधियों से अवगत कराया जा सकें। टेलीविजन ने कचरे और अपशिष्ट प्रबंधन, सामाजिक वानिकी, जल संरक्षण का मुद्दा हमेशा से उठाती आ रही है।

आज वर्तमान दौर में विश्व के सामने ग्लोबल वार्मिंग की समस्या विकट स्थिति में नजर आ रही है। 2014 में ग्लोबल वार्मिंग प्रभाव के कारण उत्तराखंड में हुए भयावह तबाही की खबर मीडिया ने दिखाई थी और ऐसी रिपोर्ट प्रकाशित की, अगर ग्लोबल वार्मिंग से निपटने की दिशा में उचित कदम नहीं उठाया जाता है, तो उत्तराखंड की भांति ही आने वाले समय में लगभग सभी पहाड़ी और तलहटी क्षेत्र अपना अस्तित्व खो देंगे। फिल्में समाज का दर्पण होती है। उसी तर्ज पर काम करते हुए विभिन्न डायरेक्टरों ने पर्यावरण प्रदूषण के खिलाफ लोगों का ध्यान खिंचने के लिए तमाम डॉक्यूमेंट्री, फिल्मों आदि का निर्माण किया जा चुका है और यह दौर जारी है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण जागरूकता के क्षेत्र में 20वीं सदी के शुरूआत के समय से ही मीडिया अपना योगदान दे रही है। रूसी मीडिया के क्षेत्र में हरियाली के लिए गिल्ड के द्वारा दिया गया योगदान सराहनीय माना जा सकता है। 1996 में गिल्ड द्वारा पर्यावरण के विरूद्ध रूसी जनता को जागरूक करने के उद्देश्य से पत्रकारिता के क्षेत्र में एक ऐसी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें पर्यावरण मुद्दे और पारिस्थितिक तंत्र को लेकर विशेष कवरेज किया गया था।

उपसंहार

मीडिया के द्वारा सन् 2002 में प्राकृतिक संसाधन के उचित उपयोग जिससे कि पर्यावरण को नुकसान न हो इसके लिए पारिस्थितिक–2002 के नाम से भी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य प्रकाश किरणों की व्यवस्था के प्रति लोगों का ध्यान लगाना निश्चित किया गया था, जिस उद्देश्य को सकारात्मक पहलू के रूप में जनता तक पहुंचाने का काम बखूबी से मीडिया ने अदा किया। इस प्रतियोगिता के उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जनता में जागरूकता, पर्यावरण में स्थानीय सरकार का योगदान और जमीन की घटती उर्वरता के प्रति जनता में प्रभावशाली विचार का प्रसारण मीडिया ने किया, जिससे लोगों के दिलों–दिमाग पर पर्यावरण जागरूकता को लेकर सजग होने की कुछ चेष्टा जागृत हुई। इस प्रतियोगिता में क्षेत्रीय समाचार पत्रों के शामिल होने की संख्या लगभग 15 के करीब थी।

साल 2016 से अमेरीका को पीछे छोड़ते हुए भारत, चीन के बाद दूसरा सर्वाधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता है। ;च्ंजमसए 2017द्ध 2020 तक भारत में इंटरनेट उपयोग करने वाले लोगों की संख्या 73 करोड़ होने का अनुमान है। साथ ही साथ सोशल मीडिया के उपयोग करने वालों की संख्या भी अधिक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. शर्मा श्रीराम, ऋग्वेद संहिता भाग–1, हरिद्वार, प्रकाशक ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, 2001
2. शर्माश्रीराम, ऋग्वेद संहिता, भाग–2, हरिद्वार, प्रकाशक ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, 2001
3. यजुर्वेद 16/34
4. यजुर्वेद 12/89
5. यजुर्वेद 12/77
6. यजुर्वेद 12/75
7. यजुर्वेद 21/21
8. यजुर्वेद 28/10
9. यजुर्वेद 1/21
10. यजुर्वेद 12/100
11. .यजुर्वेद 9/39
12. यजुर्वेद 16/18, 19, 20, 34